IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य में नारी चित्रण

पटेल कमलेशकुमार बालूभाई
आर्ट्स कोलेज बामणा
त.भिलोड़ा, जि.अरवल्ली
उत्तर गुजरात

स्वतंत्र पूर्व भारतीय समाज में स्त्रिया दीन-हिन्, निरक्षर और घर की चार दीवारों में जीवन यापन करतीं थी । उनको घर से बाहर जाना, शिक्षित होना तथा पुरुष प्रधान समाज में कदम से कदम मिलाकर चलने की अनुमति न के बराबर थी । किन्तु स्वतंत्रता के बाद परिस्थितियाँ परिवर्तित हुई । स्त्री ने शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया । परिणाम स्वरूप आधी आबादी के रूप में समाज में उन्हों ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाई । हिंदी व्यंग्यकारों ने भी आरम्भ से ही अनेक सशक्त स्त्री पात्रो को अपने व्यंग्य साहित्य में स्थान दिया है । आज भी भारतीय समाज पुरुष प्रधान ही है । आज भी स्त्री इस समाज में दुसरे दर्जे की नागरिक के रूप में ही इंगित होती है ।

परिवार समाज की इकाई है । व्यक्ति का विकास पारिवारिक वातावरण में ही अधिक होता है । विशेषतः स्त्री की दृष्टी से परिवार का विशेष मूल्य है । परिवार के बिना रहना उसके लिए असंभव है ।ओर उसके बिना परिवार का निर्माण भी संभव नहीं है । वही परिवार का मेरुदंड है लेकिन परिवार में उसका स्थान हमेशा एक सा नहीं रहता । उसमे हमेशा परिवर्तन होता रहा है । किसी एक काव्य में देवता के स्थान पर बिराजित नारी को प्रेमचंद पूर्व काल में पुरुष के मन बहलाव के 'खिलौने' का स्थान प्राप्त हुआ ।

श्रीलाल शुक्ल को सर्वाधिक प्रसिद्धि दिलाने वाले व्यंग्य उपन्यास 'रागदरबारी' में बेला को छोड़कर कोई स्त्री पात्र नहीं हैं । बेला के अतिरिक्त यदि कही कोई स्त्री पात्र का संकेत मिलता भी है तो वह अपने नाम से नहीं बल्कि 'गठरी' या 'कुतिया' के ही रूप में है । बेला का चरित्र भी संदेह के घेरे में है । 'सुनी घाटी का सूरज' की सत्या 'अज्ञातवास' की प्रभा 'बिस्मानपुर का संत', 'मकान' की सिम्मी 'राग विराग' की सुकन्या इत्यादि किसी भी स्त्री पात्र के अन्याय, अत्याचार,असमानता,तथा शोषण को लेकर व्यंग्य करने का प्रयास किया गया है । 'रागदरबारी' में शुक्ल जी का विषय 'शिवपालगंज' था, एक औसत भारतीय ग्राम । इस गाँव में स्त्री पात्र उतने ही है जितने होने चाहिए । 'रागदरबारी' में स्त्री पात्रो की उपस्थिति का जो प्रथम आभास मिलता है देखे-"सड़क की पटरी पर दोनों ओर कुछ गठरियाँ सी राखी हुई नजर आई । ये ओराते थी जो कतार बाँध कर बैठी हुई थी । वे इत्मीनान से बातचीत कराती हुई वायु-सेवन कर रही थी ओर लगे हाथ मल-मूत्र का विसर्जन भी ।" समाज में स्त्रियाँ गठरियों के समान ही तो है । इधर से उधर सरकाई जाने वाली वस्तु, कारण ? स्त्री का जन्म पुरुष की सुविधा के लिए हुआ है, उसकी सुविधा-असुविधा के बारे में क्या सोचना ?" [1]

सदियों से नारी दहेज़ प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन, पुरुषी अहम् आदि सामाजिक समस्याओं का शिकार है । आज के समय में भी इन समस्याओं की तीव्रता उतनी ही है,जीतनी पहले तथा-कथित सुधार समाज में स्त्री मुक्ति के कितने भी नारे क्यों न लगाए जाए, समाज में स्त्री को विभिन्न समस्याओं का सामना करना ही पड़ रहा है कि वह किस तरह शर्तो पर जीवन जीती है । उसकी पृष्ठभूमि किस रूप में है ?

श्रीलाल–शुक्लजी जी के व्यंग्यों में सामाजिक व्यवस्था, समाज में फैले हुयी कुरीतियों, कुरिवाज ,दहेज प्रथा आदि पर करारा व्यंग्य देखने मिलता है । किस तरह दहेज के कारण स्त्री को जला दिया जाता है। 'किस्सा एक नामाकूल बहू का' नामक व्यंग्य में श्रीलाल–शुक्लजी जी समस्त नारी दहेज की समस्या पर चोट करते हैं । बहू नामाकूल है क्योंकि वह शादी के बाद दहेज में और सामानों के साथ रंगीन टीवी नहीं लाती है– इसी व्यंग्य से "शादी हुई,उन लोगों ने कुछ अल्गम– गल्लम समान भी दिया । पर पूछिए कि कोई तूक की चीज ? मैं तो यूं ही बात उठी तो कह रहा था । वैसे खरे साहब,मै दहेज के खिलाफ हूँ ।"[2]

स्वातंत्र्योत्तर युग में सामाजिक यथार्थ एवं परम्परागत रीति – रिवाजों का विकास सबसे अधिक हुआ । विशेषकर नारी समस्या, मध्यमवर्गीय समस्या, बेरोजगारी की समस्या,किसानी समस्या,मजदूरों की समस्या,नगरीय जीवन शैली की जटिलता,दलित वर्ग की व्यथा पर लोगों का ध्यान सबसे अधिक रहा । श्रीलाल–शुक्लजी ने नारी की व्यथा को अपने व्यंग्यों में महत्त्वपूर्ण हिस्से के तहत उभारने का प्रयत्न किया है । बहू दहेज नहीं लाती है इसलिए कुल के लिए कलंकित है । दुराचार बनाम भ्रष्टाचार 'नाम का व्यंग्य में श्रीलाल–शुक्लजी जी दिखाते है कि किस तरह नेता सेक्स कांड में फंसे होते हैं । इन नेताओं के लिए स्त्री एक देह मात्र का प्रतिनिधित्व करती है । जिस नेता के पास जितनी अधिक देह होगी उतना अधिक सम्मानीय होगा । उदाहरण के तौर पर – "महाराष्ट्र के एक मिनिस्टर फ्रेंकफर्ट की यात्रा में कुछ ज्यादा ही गम गलत करने के जोश में कुछ एयर – होस्टेसों और दूसरी कन्याओं के साथ हुड़दंग मचा बैठे ।"[3] भारतीय नेता कितने सावधान हैं अपनी माँ और बहनों के लिए । इन पंक्तियों के द्वारा श्रीलाल–शुक्लजी जी ने यही प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है । शुक्लजी ने प्रेम का एक दिन 'नाम का व्यंग्य प्रेम से जुड़े विवाह और विवाह से जुड़े दहेज प्रथा पर स्वतंत्र स्वरूप में निशाना साधा है । जहाँ प्रेम सिर्फ एक दरम्यानी इन्तजाम – इंटरिम अरेंजमेन्ट – भर है । यहाँ प्रेम करने वाले जोड़े से जब पूछा जाता है कि वे शादी कब कर रहे हैं तो जवाब मिलता है– " पापा ने मेरी शादी एक आइ.ए.एस से तय कर ली है– पचास लाख का दहेज दे रहे हैं । "[4] अगर हम श्रीलाल–शुक्लजी के व्यंग्यों के अन्तराल पर विचार करें तो पाते हैं कि उनकी स्त्रियों में अस्तित्व को लेकर चुनौतियाँ है । अपने व्यंग्य में श्रीलाल–शुक्लजी उत्तर प्रदेश सरकार की प्रवर्तमान नारी समस्या पर लिखते हैं " कहा जाता है कि पिछले वर्ष बलात्कार के मामलों में उत्तर प्रदेश के संपूर्ण भारतवर्ष में प्रथम स्थान पाने का गौरव मिला । "[5] उत्तर प्रदेश की स्त्री के प्रति हिंसा और बलात्कार के मुद्दे की बात करते हुए श्रीलाल–शुक्लजी संपूर्ण राष्ट्रव्यापी स्त्री अस्मिता की बात करते हैं । श्रीलाल–शुक्लजी दहेज प्रथा को समाज का सड़ा हुआ हिस्सा मानते हैं । " शादी के बाद जब उपभोक्ता वस्तु यानी बहु वर– पक्षवालों के हाथ लग जाती है,तो वे उसका प्रयोग उस बंधक की तरह करने लगते है जिसे संताने की धमकी देकर प्रस्तुत अभिमावकों से मोटी फिरौती पाई जा सकती है ।"[6]

श्रीलाल–शुक्लजी दहेज प्रथा पर चिकाटी काटते हुए पाठकों के मन में हलचल पैदा करते हैं । जिस बेटी का बचपन से पालपोश कर बड़ा किया जाता है,पढ़ाया लिखाया जाता है,इनमें अच्छे संस्कार डाले जाते हैं बाद में उसे अपने आँखों से जलता और तड़पता हुआ देख माता – पिता का कलेजा छलनी हो जाता है क्योंकि वर – पक्षवालों को दहेज चाहिए । नारी की हत्या सिर्फ इसलिए कर दी जाती है कि वह अपने हक के लिए लड़ना सीख चुकी है । दहेज जिस तरह जधन्य अपराध में शामिल होने से कतराती है । हमारे देश में स्त्री स्वाधीनता की बात आते ही मध्यवर्गीय समाज की परिकल्पना का दृश्य उभरकर आता है क्योंकि "आजादी के बाद के बरसों में हुए,दोहरे स्वप्न को इसी वर्ग की स्त्रियाँ बखूबी समझ पाई । अपनी भागीदारी की अनुभवों के साथ शिक्षित होने की वजह से आज उसे अभिव्यक्त करने लायक साहस और सलीफ़ा भी रखने लगी है ।"[7] तात्पर्य यह है कि पितृसत्तात्मक धरातल से उठकर मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्रियाँ अपने जीवन की दोहरी जिम्मेदारियों को पूर्ण स्वरूप से सक्षम बना रही हैं । एक ओर जहाँ स्त्रियाँ अपनी कामकाजी जीवन के साथ सामाजिक पृष्ठभूमि तैयार करती हैं,वहीं दूसरी ओर पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ समाज प्रस्तुत बनाये गये गैर नियमों,उसूलों और समाज के खंडन में जिम्मेदार मामलों को जिस तरह बाल मजूदर,दहेज प्रथा,भ्रूण हत्या का विरोध कर नैतिक सामाजिक मूल्यों का गठन करती हैं ।

दहलीज के बाहर जाकर चाहे कितने बड़े – बड़े खादीधारी नेता,सामंती या बुद्धिजीवी नारी कल्याण की गुहार लगाएँ,वर्ग समता,रुढ़िवाद या अंधविश्वासों का खंडन करते दिखते हों परन्तु घर के भीतर आकर उसकी पितृसत्तात्मक सामंती व्यवस्था और दोहरा शासन कायम हो जाता है । नारी शिक्षा के साथ भी नारी को कुछ तरह के दकियानूसी सवालों से घिरना पड़ता है । यूँ तो " उनकी पूरी शिक्षा– पद्धति,पहले तो छात्रों को

स्वतंत्र होना, आत्मसमर्थ, कर्मनिष्ठ और अध्ययनशील बनने का पाठ पढ़ाती है और फिर चुपके से यह भी जोड़ देती है कि स्त्री शिक्षा का मुख्य ध्येय है अगली पीढ़ी को देश के लिए तैयार करना । "[8] अगर कहा जाए कि स्त्रियों को मातृत्व का भार सौपने वाले प्रस्तुत लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत अपने जीवन को दोहरी,तीहरी और न जाने कितने प्रकार की जिम्मेदारियों को ढोने का काम दिया गया है तो गलत न होगा । श्रीलाल–शुक्लजी ने नारी समस्या को संपूर्ण राष्ट्र की समस्या के तहत अपने व्यंग्यों में स्थान दिया है । नारी को विश्व व्यापार की जगत से उठाकर शक्ति के स्वरूप में स्थापित करने का काम शुक्ल ने किया है । श्रीलाल–शुक्लजी ने अपने व्यंग्य में कहा है कि किस तरह नेता स्वतंत्र स्वरूप में दिल बहलाने के लिए अपने से आधे उम्र की लड़कियों के साथ सेक्स कांड में लिपटे होते हैं और दूसरी ओर अपनी बीबी के साथ धोखा करके बनावट के आँसू बहाते हैं ।

व्यंग्यकार के द्वारा यह कहकर कि अगर विदेश दुराचार के खिलाफ है तो हम भ्रष्टाचार के खिलाफ स्पष्ट करते हैं कि स्थिति का परिणाम यही है कि एक ओर इन्ही लड़कियों को विकास का पाठ पढ़ाया जाता है और दूसरी ओर इन्हें व्यापार और देहव्यापार के लिए मजबूर कर दिया जाता है । परिवेश का यही प्रभाव श्रीलाल–शुक्लजी को आक्रांत करता है,श्रीलाल–शुक्लजी व्यंग्यों को यथार्थ से रुबरु करवाता है । श्रीलाल–शुक्लजी व्यंग्यों में सच्चाई से भरे जीवन के उल्लास और जीवन्तता का इस्तेमाल है जो पाठक मन को छू जाता है और कुछ अलग से सोचने पर मजबूर करता है । उनका व्यंग्य " सबसे अधिकतम फूल है,जिसकी सुगन्ध बिना हवा के संसार भर में फैल रही है। " [9] श्रीलाल–शुक्लजी लेखनी में बुनियाद स्तम्भ है,जो साहित्य के इर्द – गिर्द फैली हुई है । उसमें चेतना और युग्म जीवन की खोज है । श्रीलाल–शुक्लजी व्यंग्यों में मौजूद शब्दों पर उनका अधिपत्य है क्योंकि उन तमाम सामाजिक विषमताओं पर श्रीलाल–शुक्लजी व्यक्तिगत और प्रशासनिक अनुभूतियों की पड़ताल है । श्रीलाल–शुक्लजी व्यंग्य किसी काल विशेष की नही बल्कि भविष्य के प्रति स्वतंत्र स्वरूप में एक दृष्टिकोण रखते हैं । श्रीलाल–शुक्लजी के व्यंग्य रचनाएँ जिस तरह की – 'फटाफट विकास का अचूक नुस्खा ', दूध के धुले सब तरह से खुले, काम नहीं वेतन बदस्तूर, होरी और उन्नीस सौ चौरासी ' जीती – जागती सरकार का एक हसीन सपना,एक युवा वर्ग के भी नाम ' दूरदर्शन का जीवन दर्शन, पंडित ठाकुर, लाल, बाबू, मुंशी आदि, दुराचार बनाम भ्रष्टाचार ', किस्सा एक नामाकूलबहू का ', घूपछांह की भूमिका,मेरा ग्राम्य,एक देहाती की नजर में, शहर के सौ मीटर,उमराव नगर में कुछ दिन ' आदि व्यंग्य रचनाएँ कालजयी हैं । ये रचनाएँ न शिर्फ़ व्यंग्य के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण हैं बल्कि समाज में फैली विषमताओं और विद्रूपताओं के उद्घाटन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण फलदायी है ।

नारी समस्या पर स्वतंत्र स्वरूप में खोज–विचार प्रदर्शित करते हुए श्रीलाल–शुक्लजी अत्यंत गंभीर दिखाई पड़ते हैं क्योंकि "यहाँ के लोगों ने सब स्त्रियों को निम्न / हीन कर रखा है और यही प्रस्तुत देश की दुर्दशा का मुख्य कारण है ।" स्त्रियों के साथ बंधन और पुरुषों के साथ स्वतंत्र जिस तरह शब्द को लगाकर मुख्य स्वरूप से स्त्रियों को दासी का स्वरूप ओढ़ा दिया है जिस कारण पुरुष गद्दी तकिया लगाकर बैठते हैं परन्तु स्त्रियों को घर का सारा काम जिस तरह झाड़ू पोछा लगाना , रसोई का काम संभालना पड़ता है और अगर महिला कामकाजी हो तो उसे दोहरी जिंदगी का निर्वाह भी करना पड़ता है । दहेज प्रथा के विवाद पर साहित्यकार विचार करते हुए जब प्रेमी से पूछते हैं अगर कम दहेज मिलने पर आपकी माँ चाहें तो आपकी पत्नी को जला दिया जाए तो उसे जल जाने देंगे ? और लड़का यह कहकर स्पष्ट कर देता है कि सोचना पड़ेगा । आखिर माँ सिर्फ एक हैं, पत्नी तो दूसरी,तीसरी या चौथी भी आ सकती है । अत : दहेज नाम का गहरी बीमारी की समस्या आखिर आज भी उतनी ही ज्वलंत है जितनी कल थी।"[10] अतः श्रीलाल–शुक्लजी के व्यंग्य में नारी व्यथा के साथ नारी के अस्मिता की बात कही गई है । यहाँ नारी को भोग्या नहीं बल्कि शक्ति का दूसरा स्वरूप माना जाता हैं । श्रीलाल–शुक्लजी के नारी में वह शक्ति है जो सिर्फ भारतवर्ष को ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को बंधुत्व और ममत्व का पाठ पढ़ाने में सक्षम है तथा साथ ही अपने अधिकार के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है ।

❖ **संदर्भ-संकेत :-**

- रागदरबारी, श्रीलाल शुक्ल
- कुछ जमीन पर कुछ हवां में, श्रीलाल शुक्ल, पृ-150
- वही पृ-127
- खबरों की जुगाली,श्रीलाल शुक्ल ,पृ-86
- कुछ जमीन पर कुछ हवां में, श्रीलाल शुक्ल, पृ-39
- स्त्री दहेज़ की राजनीति से देश की राजधानी तक,मृणाली पाण्डे,पृ-58
- वही पृ-52
- वही पृ-53
- अगर मुल्क में अखबार न हो,नामवरसिंह (सम्पादक),पृ-221
- भारतेंदु हरिश्चंद्र ग्रंथावली, ओमप्रकाश सिंह,पृ-8

सारांश

पटेल कमलेशकुमार बालूभाई
आर्ट्स कोलेज बामणा
त.भिलोड़ा, जि.अरवल्ली
उत्तर गुजरात

सदियों से नारी दहेज़ प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन, पुरुषी अहम् आदि सामाजिक समस्याओं का शिकार है । आज के समय में भी इन समस्याओं की तीव्रता उतनी ही है,जीतनी पहले तथा-कथित सुधार समाज में थी । स्त्री मुक्ति के कितने भी नारे क्यों न लगाए जाए, समाज में स्त्री को विभिन्न समस्याओं का सामना करना ही पड़ रहा है कि वह किस तरह शर्तो पर जीवन जीती है । उसकी पृष्ठभूमि किस रूप में है ? श्रीलाल-शुक्लजी दहेज प्रथा पर चिकाटी काटते हुए पाठकों के मन में हलचल पैदा करते हैं । जिस बेटी को बचपन से पालपोश कर बड़ा किया जाता है,पढ़ाया लिखाया जाता है,इनमें अच्छे संस्कार डाले जाते हैं बाद में उसे अपने आँखों से जलता और तड़पता हुआ देख माता - पिता का कलेजा छलनी हो जाता है क्योंकि वर-पक्षवालों को दहेज चाहिए । श्रीलाल-शुक्लजी जी के व्यंग्यों में सामाजिक व्यवस्था, समाज में फैले हुयी कुरीतियों, कुरिवाज ,दहेज प्रथा आदि पर करारा व्यंग्य किया हैं ।